हर बच्चा सीख सकता है

ओमपाल प्रजापति
प्रधानाध्यापक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय, नयागांव, (पंवालिया)
टोडारायसिंह टोंक, राजस्थान

सहायक अध्यापिका – माया चौधरी
भोजन माता – रोशन देवी शर्मा
नामांकन – 34

विद्यालय की भौगोलिक स्थिति

टोडारायसिंह ब्लॉक के उत्तर पश्चिम दिशा में मांदौलाई रोड पर स्थित है नयागांव विद्यालय। ब्लॉक मुख्यालय से विद्यालय की दूरी 27 किलोमीटर है। विद्यालय तक पहुंचने के लिए 2 किलोमीटर तक मुख्य मार्ग से पक्की रोड जाती है। गांव में लगभग 45 परिवार हैं। नयागांव में जाट, ब्राहाण, बैरवा समुदाय के परिवारों की लगभग 700 जनसंख्या है, जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि है। विद्यालय परिसर काफी बड़ा है और स्वच्छ रहता है। विद्यालय में 2 शिक्षक कार्यरत हैं। 23 बच्चों के नामाकंन के साथ लगभग 10 अनामांकित बच्चे विद्यालय से जुड़े हुए हैं ये बच्चे अपने भाई बहिनों के साथ विद्यालय आ जाते हैं और कक्षा 1 के बच्चों के साथ बैठकर ही पढ़ाई–लिखाई का कार्य करते हैं।

विद्यालय में सीखने-सिखाने का माहौल और गतिविधियां

ओमपाल जी अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन की गतिविधियों से विगत 2 साल से जुड़कर, सीखने–सिखाने के लिए विभिन्न कार्यशाला व अनौपचारिक मंच का उपयोग करते हैं। वे काफी मेहनती एवं ऊर्जावान हैं। विद्यालय की प्रतिदिन की दिनचर्या में उनके द्वारा बच्चों के साथ किया गया कार्य उनकी इस ऊर्जा को बनाये रखता है। विद्यालय में बच्चों के साथ वे मित्रवत व्यवहार के साथ कार्य करते हैं। यही कारण है कि बच्चे उनसे खुलकर बातचीत कर पाते हैं और शिक्षण में आने वाली समस्याओं को पूछते हैं जिससे यह शिक्षण और सहज दिखाई देता है।

ओमपाल जी प्रार्थना सभा को रोचक बनाने और बच्चों में अभिव्यक्ति कौशल के विकास हेतु एक मंच देने के उद्देश्य से कुछ नयी गतिविधियों का समावेश भी कर रहे हैं। इस प्रार्थना सभा में बच्चों को बालगीत, कविता, कहानी सुनने–सुनाने का अवसर दिया जाता है जिससे बच्चों व शिक्षकों के मध्य आपसी रिश्ते सहज बन पाये हैं। इस सभा में की जाने वाली गतिविधियों से बच्चों का सुबह के सत्र में काफी उत्साह बनता है जो निश्चित तौर पर उनके शिक्षण को और प्रभावी बनाता है। विद्यालय में बच्चे स्वअनुशासन की ओर उन्मुख हों इसके लिए शिक्षक समय–समय पर बच्चों के साथ बातचीत कर आम राय से व्यवस्था बनाने में सहयोग लेते हैं। उदाहरणस्वरूप पहले बच्चे कक्षा के बाहर जूते–चप्पलों को ऐसे ही खोल देते थे, इस पर शिक्षक द्वारा प्रार्थना सभा और कालांश में सतत बातचीत कर एक व्यवस्था बनाई गयी कि सभी बच्चे और शिक्षक चप्पल–जूते पंक्ति में उतारें। शुरू में इस कार्य में थोड़ी चुनौती आई पर अब सभी बच्चे इस कार्य में सहयोग करते हैं। विद्यालय की साफ–सफाई में भी यह सहयोग दिखाई देता है।

कक्षा–कक्ष में शिक्षण कार्य की प्रकियायें

विद्यालय में बच्चों के साथ सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में दोनों शिक्षक बच्चों के साथ अन्तर्क्रिया करते हुए शिक्षण कार्य करते हैं। शिक्षक ओमपाल जी कक्षा 1 से 5 तक बच्चों के साथ अंग्रेजी व गणित विषय पर कार्य करते हैं। शिक्षक बच्चों के साथ शिक्षण कार्य में अवधारणात्मक समझ बनाने के लिए पाठयपुस्तक और इसके इतर गतिविधियों का शिक्षण में समावेश करते हैं। शिक्षक के कक्षा अवलोकन में देखा गया कि बच्चो के साथ गणित में संक्रियाओं पर कार्य करने हेतु बच्चों को पहले गोल घेरे में बैठाकर सहज करने की गतिविधि की गई। इसके बाद जोड़ सिखाने के लिए कुछ उदाहरण लेते हुए संवाद किया गया। इस प्रक्रिया में बच्चों के पूर्वज्ञान को जोड़ते हुए संख्या पहचान, स्थानीयमान, संख्या में स्थान के बदलाव की समझ, और फिर साधारण जोड़ से हासिल के जोड़ सिखाने की प्रकिया को समझना था। इसके लिए जहां जरूरत लगती है वहां सहायक शिक्षण सामग्री का भी उपयोग किया जाता है। शिक्षक ने बातचीत में बताया कि आमतौर पर बच्चे संख्याओं को रट लेते हैं जिससे बच्चों में मात्रात्मक समझ नहीं बन पाती। इसके लिए जरूरी है पहले ठोस चीजों से बच्चों के साथ कार्य किया जाये और जब यह अभ्यास ठीक दिशा में हो जाये तब अमूर्त अवधारणाओं की और बढ़ना चाहिये जिससे बच्चे गणित को ठीक से समझ पाते हैं। कक्षा में बच्चों के स्तर को ध्यान में रखते हुए उपसमूह में शिक्षण और तद्नुरूप शिक्षण सामग्री का उपयोग करना जरूरी होता है।

कक्षा में बच्चों के साथ संवाद के दौरान स्थानीय भाषा का उपयोग करते हुए स्थानीय उदाहरण के साथ समझ बनाने का प्रयास किया जाता है। इससे बच्चे काफी सहज हो जाते हैं और उदाहरणों के साथ बातचीत करने से अवधारणा को सही रूप में समझने में भी मदद मिलती है। कक्षा में कार्य के दौरान बच्चों की भागीदारी सीखने–सिखाने में बेहतर बन पाती है।

इसी संदर्भ में विद्यालय में शिक्षिका माया जी द्वारा हिन्दी और पर्यावरण विषय पर कार्य किया जाता है। माया जी बच्चों के साथ भाषा–शिक्षण में स्थानीय भाषा में कहानी सुनाना और बच्चों से कहानी सुनने तथा बच्चों की मन की बात को सुनकर समझती हैं। शिक्षिका ने बताया कि एक शिक्षक के लिए यह जरूरी है कि शुरुआती कक्षाओं में बच्चों को लिखने–पढ़ने के लिए तैयार करने से पहले इससे जुड़े पक्षों पर कार्य करना जरूरी है जिससे बच्चों का मानसिक रूप से लगाव बन पाता है। कक्षा में भाषा शिक्षण पुस्तकालय का, चित्र व संदर्भ और रंगीन पृष्ठ युक्त पुस्तक का उपयोग करके, कहानी सुनाना और चित्र पर चर्चा करने से बच्चों का जुड़ाव बातचीत से बन पाता है। माया जी बच्चों को गोल घेरे में बैठाकर शैक्षिक कार्य करती हैं जिससे हर बच्चे का जुड़ाव बन पाता है। विद्यालय में परम्परागत शिक्षण व्यवस्था के स्थान पर सृजनात्मक व रचनात्मक कार्य पर जोर दिया जाता है। विद्यालय के वातावरण में शिक्षक और बच्चों के मध्य मिलकर, सीखने–सिखाने का माहौल बन पाया है।

सीखने-सिखाने को लेकर शिक्षक की मान्यताएं

विद्यालय में दोनों शिक्षक/शिक्षिका बच्चों के सीखने को लेकर यह मानते हैं कि हर कोई बच्चा कक्षा में सीखने की प्रक्रिया से जुड़कर सीख सकता है। यह बात शिक्षक के काम करने की प्रक्रिया और अवधारणात्मक समझ पर निर्भर करती है। बच्चे को हम क्या सिखाने जा रहे हैं, क्यों और कैसे सिखाने की बात करते हैं? अगर बच्चे को कक्षा में सीखने के उचित अवसर और माहौल दिया जाये तो हर बच्चा सीख सकता है। ओमपाल जी अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के साथ अकादमिक कार्यशाला व संवाद से जुडकर स्वयं की क्षमताओं का संवर्धन कर पाये हैं। ओमपाल जी कक्षा–कक्ष की समस्याओं को पढ़ने–लिखने के साथ हल कर पाते है।

समुदाय व विद्यालय के रिश्ते

विद्यालय से स्थानीय गांव में निवास करने वाले समुदायों के बच्चे शिक्षण के लिए जुड़े हुए हैं। विद्यालय में समुदाय व अभिभावकों का जुड़ाव बच्चों के सीखने–सिखाने को लेकर सजगता युक्त माहौल बनाता है। विद्यालय की विविध गतिविधियों में समुदाय का निरन्तर जुडाव विद्यालय को बेहतर बनाने में सकारात्मक भूमिका का निर्वहन कर रहा है। जब भी विद्यालय में कोई उत्सव होता है तो शिक्षक गांव में जाकर लोगों से संवाद करते हैं इस कार्य में भी बच्चों का अपेक्षित सहयोग लिया जाता है। विद्यालय में होने वाली सामुदायिक बैठकों में बच्चों के अकादमिक कार्य को साझा किया जाता है। शिक्षक, समुदाय के बीच, औपचारिक व अनौपचारिक मंचों पर बच्चों के सीखने को लेकर संवाद कर पाते हैं। विद्यालय के शिक्षकों का इस प्रकार का समर्पण भाव, विद्यालय को जीवंत व सीखने के लिए उपयुक्त माहौल अन्य विद्यालयों के लिए भी प्रेरणा बनता है।

(ओमपाल प्रजापति की उमाकांत शर्मा से हुई बातचीत पर आधारित)